KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A8 PAGE NO.27-29
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

प्राचीन भारत के प्रमुख बौद्ध शिक्षण संस्थान

[1]हरवंश

[1]शोधार्थी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश

छठी शताब्दी ई0 पू0 के प्रारम्भ में भारत में सार्वभोम सत्ता का अभाव था। महात्मा बौद्ध के जन्म के कुछ समय पूर्व उत्तर भारत सोलह महाजनपदों में विभक्त था। इस काल में कुछ गणराज्यों के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं। इन्हीं में से कपिलवस्तु के शाक्यगण के प्रधान शुद्धोधन के घर गौतम का जन्म हुआ। राजकुमार गौतम के लिए पिता ने शिक्षा का विशेष प्रबन्ध किया। गौतम को सांसारिक विषयभोगों एवं क्रिया कलापों में सन्तोष नहीं मिला और इन्होंने 20 वर्ष की आयु में घर त्याग कर दिया। इसी घटना को बौद्ध शब्दावली में "महाभिनिश्क्रमण" कहा गया। ज्ञान प्राप्ति के बाद के अनुभवों एवं तर्कों के आधार पर सिद्धार्थ ने बौद्ध धर्म की स्थापना की। प्रारम्भ से ही इस धर्म को शासकों एवं वशों ने बाहरी या आन्तरिक रूप में समर्थन दिया जैसे हर्यक, शाक्य, लिच्छवि, मल्ल एवं नाग आदि । अशोक बौद्ध धर्म का बड़ा सरंक्षक बना और इसने प्रचार हेतु प्रचारक विदेशों में भेजे।[1] मौर्योत्तर युग के शुंग, सातवाहनों, ग्रीक, कुषाणो के साथ–साथ गुप्त काल तक भी बौद्ध धर्म प्रगति करता रहा।[2] हर्षवर्धन भी सहिष्णु एवं बौद्ध धर्म अनुयायी शासक था। इसने बौद्ध धर्म के कल्याण हेतु अनेक कार्य किये।[3] पूर्व मध्यकाल में भी अनेक राजवंश थे जिन्होने बौद्ध धर्म को आश्रय दिया । जैसे कारकोट, गुर्जर प्रतिहार, गहडवाल, चन्दैल, पाल,भूमिकार आदि।

छठी शताब्दी ई0 पू0 के प्रारम्भ में भारत में सार्वभोम सत्ता का अभाव था। महात्मा बौद्ध के जन्म के कुछ समय पूर्व उत्तर भारत सोलह महाजनपदों में विभक्त था। इस काल में कुछ गणराज्यों के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं। इन्हीं में से कपिलवस्तु के शाक्यगण के प्रधान शुद्धोधन के घर गौतम का जन्म हुआ। राजकुमार गौतम के लिए पिता ने शिक्षा का विशेष प्रबन्ध किया। गौतम को सांसारिक विषयभोगों एवं क्रिया कलापों में सन्तोष नहीं मिला और इन्होंने 20 वर्ष की आयु में घर त्याग कर दिया। इसी घटना को बौद्ध शब्दावली में "महाभिनिश्क्रमण" कहा गया। ज्ञान प्राप्ति के बाद के अनुभवों एवं तर्कों के आधार पर सिद्धार्थ ने बौद्ध धर्म की स्थापना की। प्रारम्भ से ही इस धर्म को शासकों एवं वशों ने बाहरी या आन्तरिक रूप में समर्थन दिया जैसे हर्यक, शाक्य, लिच्छवि, मल्ल एवं नाग आदि । अशोक बौद्ध धर्म का बड़ा सरंक्षक बना और इसने प्रचार हेतु प्रचारक विदेशों में भेजे।[1] मौर्योत्तर युग के शुंग, सातवाहनों, ग्रीक, कुषाणो के साथ–साथ गुप्त काल तक भी बौद्ध धर्म प्रगति करता रहा।[2] हर्षवर्धन भी सहिष्णु एवं बौद्ध धर्म अनुयायी शासक था। इसने बौद्ध धर्म के कल्याण हेतु अनेक कार्य किये।[3] पूर्व मध्यकाल में भी अनेक राजवंश थे जिन्होने बौद्ध धर्म को आश्रय दिया । जैसे कारकोट, गुर्जर प्रतिहार, गहडवाल, चन्दैल, पाल,भूमिकार आदि।

बौद्ध दर्शन :–

महात्मा बुद्ध ने प्रथम उपदेश सानाथ में दिया जोकि बौद्ध ग्रन्थों में "धर्मचक्रप्रवर्तन" कहलाया, वही उपदेश बौद्धमत की शिक्षाओं का मूल केन्द्र बिन्दु बना। इस उपदेश में चार पवित्र सत्य तथा अश्टांगिक मार्ग अर्थात संतुलित सरल जीवन की ओर अग्रसर करने वाले कर्म के अन्य सिद्धान्त समाहित थे, जिसे मध्यम मार्ग कहा गया। बौद्ध दर्शन की एक रूप देने एवं शंकाओं को दूर करने के लिए महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद चार बौद्ध सभाओं का विशेष महत्व है जिनका आयोजन अलग–2 समय पर हुआ । मृत्यु उपरांत बुद्ध की शिक्षाओं को तीन पिटकों में विभाजित किया गया।

1. **विनयपिटक** –इसमें संघ सम्बंधी नियम एवं दैनिक जीवन सम्बन्धी आचार विचारों का वर्णन है।
2. **सुत्तपिटक** – इसमें बौद्ध धर्म के सिद्धान्त एवं उपदेशों का संग्रह है।
3. **अभिधम्भ पिटक** :– इसमें दार्शनिक सिद्धान्तों का संग्रह है जो प्रश्न उत्तर रूप में हैं।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

प्रारम्भिक बौद्ध ग्रन्थ पालि भाषा में लिखे गए परन्तु बाद में संस्कृत भाषा का भी प्रयोग किया गया। महात्मा बुद्ध के सिद्धान्त से लोग प्रभावित हुए। धीरे–2 धर्म का विकास एवं विस्तार हुआ। जिसमें भिक्षुओं ने विशेष योगदान दिया, परन्तु बाद के समय में बौद्ध धर्म में विभाजन हुआ जिसके कारण अनेक अलग–2 निकाय बन गए।[4] बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार इन निकायों की संख्या 18 हो गई थी । इनमें महासांघिक (महायान), स्थर्विवादी (हीनयान) प्रमुख सम्प्रदाय थे। पूर्व मध्य तक बौद्ध सम्प्रदायों में तान्त्रिक प्रवृतियों बढ़ने लगी और वज्रयान नामक शाखा का उदय हुआ।[5] इस तरह मूल बौद्ध मत में परिर्वतन हुए जैसे दार्शनिक क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में, । पूर्व मध्य काल तक बौद्ध धर्म उत्तर भारत में लुप्त प्राय हो गया था। तथापि उसकी टिमटिमाती दीपशिखा काफी समय तक जीवित रही।[6]

बौद्ध शिक्षाः–

पालि निकायों मे बुद्ध युग की सभी प्रमुख शिक्षाओं के सम्बंध में जानकारी प्राप्त होती है। मठ (डवदेंजतल) बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केन्द्र बिन्दु होते थे। यहाँ पर प्रवेश लेने के बाद छात्रों को, यहॉ के नियम, पाठ्यक्रम के हिसाब से चलना होता था। इस शिक्षा प्राक्रिया की समय अवधि 12 वर्ष होती थी। गुरू (शास्ता) अपने श्रावको (शिष्यो) से परिवार की तरह व्यवहार करते थे। शिष्य के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए गुरू की जिम्मेवारी होती थी। मठो में शिष्य निवास करते थे जिसके कारण गुरू शिष्य के सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण एवं स्नेहपूर्ण रहते थे। यहॉ पर त्रिपिटिको की शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाता था। समाज की जरूरतों के हिसाब से बाद के समय में व्यवसायिक शिक्षा, कला, मूर्तिकला, वास्तुकला एवं औषधी विज्ञान को भी पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया गया। प्राथमिक स्तर पर मातृ भाषा में शिक्षा दी जाती थी जैसे पालि, प्राकृत, वैसे बाद के समय में संस्कृत में भी शिक्षा कार्य होने लगा तथा वैदिक शिक्षा के पहलुओं को पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया गया। बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य शिष्यों को स्वतन्त्र, बुद्धिमान, नैतिक, अहिंसक एवं धर्म निरपेक्ष बनाना था। जिसके परिणामस्वरूप छात्र विवेकयुक्त, मानवतावादी, व्यवहारवादी, तर्कवादी बनते एवं अंधविश्वासों से दूर रहते थे। छात्रों को लालच, कामुक्ता एवं अज्ञानता से दूर रहने की शिक्षा दी जाती थी अर्थात निष्कर्ष : बौद्ध शिक्षा का मुख्य सिद्धान्त अज्ञानी को ज्ञानी, असभ्य जानवर को नेक बनाना था। इन्हीं विशेषताओं के परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म ने विदेशी छात्रों को अपनी ओर आकर्षित किया। बौद्ध संघाराम में विभिन्न जाति, धर्मो, पंथों एवं सम्प्रदायों के छात्र आते थे । जहॉ पर किसी तरह का नस्लीय भेदभाव नहीं होता था।

शिक्षण संस्थानः–

शिक्षण संस्थान किसी राष्ट्र की भौतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक प्रगति का प्रतिबिम्ब होते हैं – जो राष्ट्र की सभ्यता की अन्तरात्मा और आदर्शों को समझने में सहायता करते हैं। प्राचीन काल से ही भारत में शिक्षा को धर्म के अंग के रूप में महत्व दिया गया है जिसमें शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास कर जीवन के सर्वोच्च उद्देश्य को प्राप्त करना अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति था। भारत में बौद्ध शिक्षा का स्वरूप काफी प्राचीन है।[7] शिक्षा का सम्बन्ध ज्ञानार्जन तक ही सीमित न था बल्कि बौद्धमत में उस तरह की शिक्षा को उपयोगी बताया गया जो सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करें । परिवार और समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों के निर्वाह में जो शिक्षा सहायक बनती उसे ही पूर्ण शिक्षा के रूप में मान्यता थी। उदार एवं दरिद्र छात्रों के लिए शिक्षण संस्थानों में छात्रवृति का भी विशेष प्रबन्ध होता था। नालन्दा, विक्रमशिला, बल्लभी और ओदन्तपुरी आदि बौद्ध शिक्षण संस्थानों की उपयोगिता को भुलाया नहीं जा सकता जिनका वर्णन इस प्रकार है।

नालन्दा

नालन्दा (बिहार) बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा क्योंकि महात्मा बुद्ध ने भी इस स्थल की कई बार यात्रा की थी। परन्तु गुप्त शासक कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य (415–455 ई0) ने बौद्ध धर्म के विकास तथा स्थापित्व के लिए कई ऐसे काम किए, जिसे सम्राट अशोक ने भी नहीं किया। यह काम था नालन्दा में बौद्धधर्म की शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय की स्थापना जिसके कारण यह केन्द्र विश्वप्रसिद्ध हो गया। फाह्यान को छोड़कर ह्यूनसांग, इत्सिंग आदि सभी चीनी यात्री इस विश्वविद्यालय का वर्णन अपने विवरणों में करते हैं।[8] इस संस्थान ने 5वीं शताब्दी से लेकर 13वीं शताब्दी तक देश–विदेश के विभिन्न स्थलों और सम्प्रदायों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। नालन्दा में बौद्ध साहित्य, दर्शन के अतिरिक्त अन्य धर्मो के साहित्य, दर्शन और अन्य आवश्यक विषयों का भी अध्ययन कराया जाता था।[9] नालन्दा विश्वविद्यालय ने केवल भारतीय विद्यार्थियों को ही नहीं बल्कि विदेशी विद्यार्थियों को भी अपनी ओर आकर्षित किया, जैसे शार्मन–ह्यून–नि, थौह्वी, आर्थवर्मन, इत्सिंग, ह्यूनसन एवं वान होंग । यद्यपि नालन्दा महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का केन्द्र था तथापि यहाँ अनेक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। पाठयक्रम में महायान शिक्षा के अतिरिक्त वेद, हेतुवाद, शब्दविद्या, योगशास्त्र, चिकित्सा, तंन्त्रविद्या एवं सांख्य दर्शन पर व्याख्यान दिये जाते थे। इन व्याख्यानों में प्रत्येक विद्यार्थी को शामिल होना पड़ता था। नालन्दा में की गई खुदाईयों से पता चलता है कि यहॉ का विश्वविद्यालय एक मील लम्बे तथा आधा मील चौड़े क्षेत्र में स्थित था। भवन, स्तूप, विहार वैज्ञानिक योजना के आधार पर बनाये गये थे। विश्वविद्यालय में आठ बड़े कमरे तथा व्याख्यान के लिए तीन सौ छोटे कमरे बने हुए थे। तीन भवनों में स्थित धर्मगज्ज नामक विशाल पुस्तकालय था। पुस्तकालय में ग्रंथों का विशाल संग्रह तथा प्राचीन पांडुलिपियॉ सुरक्षित थी। पुस्तकालय के तीन प्रमुख भवन रत्नसागर, रत्नोदधि तथा रत्नरंजक थे। विश्वविद्यालय का प्रशासन चलाने के लिए बौद्धिक एवं प्रशासनिक परिषदें होती थी, जिनके ऊपर कुलपति होता था।[10] विश्वविद्यालय का खर्च शासकों तथा अन्य दाताओं द्वारा प्रदान किये गये गॉव के राजस्व से चलता था। इत्सिंग नामक चीनी यात्री के समय इसके अधिकार में 200 गॉवों का राजस्व था। खुदाई में कुछ गॉव की मोहरें तथा पत्र मिले हैं जो विश्वविद्यालय को सम्बोधित करके लिखे गये है।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

विक्रमशिला

बिहार प्रान्त के भागलपुर में स्थित यह विश्वविद्यालय पथरघाट नामक पहाड़ी पर बना हुआ था। जिसके विस्तृत खण्ड़हर आज भी प्राप्त होते हैं। इसकी स्थापना पाल नरेश धर्मपाल (770 ई0) ने करवाई थी। यहॉ पर 160 विहार तथा व्याख्यान के लिए अनेक कक्ष बने हुए थे। वैसे इस केन्द्र को 13वीं शताब्दी तक धर्मपाल के उत्तराधिकारियों से संरक्षण मिलता रहा। विश्वविद्यालय में छः महाविद्यालय थे। प्रत्येक में एक केन्द्रीय कक्ष तथा 108 अध्यापक थे। केन्द्रीय भवन को "विज्ञान भवन" कहा जाता था। प्रत्येक महाविद्यालय में एक प्रवेश द्वार होता था जहॉ पर एक द्वारपंडित बैठता था। द्वारपंडित के परीक्षण के बाद ही विद्यार्थी महाविद्यालय में प्रवेश करता था। विद्यालय में अध्ययन विशेष विषय व्याकरण, तर्कशास्त्र, तन्त्र तथा विधिवाद आदि थे। इस प्रकार यहॉ का पाठ्क्रम नालन्दा के समान विस्तृत नहीं था। परन्तु इस महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र को 1203 ई0 में मुस्लिम आक्रांता बख्तियार खिल्जी ने दुर्ग के भ्रम में ध्वस्त कर दिया। भिक्षुओं की सामुहिक हत्या कर दी गई और ग्रन्थों को जला दिया गया।

वल्लभी

इस नगर की स्थापना मैत्रक वंशी शासक भट्टार्क ने की थी। 7वीं शताब्दी में वल्लभी एक प्रसिद्ध व्यापारिक एवं शैक्षिक केन्द्र बना। ह्यूनसांग इस नगर की समृद्धि का वर्णन करता है उसके अनुसार यहॉ एक सौ बौद्ध विहार थे। जिनमें लगभग 6000 हीनयानी भिक्षु निवास करते थे। इत्सिंग हमें बताता है कि बाहरी देशों के विद्वान यहॉ आते थे। यहाँ धर्म, अर्थशास्त्र, नीति, कानून, चिकित्सा शास्त्र आदि प्रमुख अध्ययन के विषय थे। यहाँ पर विशाल पुस्तकालय भी था। इस विश्वविद्यालय को राजा तथा सम्पन्न लोग उदारतापूर्वक सहायता देते थे। यहॉ पर बौद्ध दर्शन शिक्षा को सम्पूर्ण संरक्षण मिला परन्तु बाद की शताब्दियों में वल्लभी पर अरबों का आक्रमण हुआ, जिसमें यह पूर्ण रूप से नष्ट हो गया।

प्रमुख महाविद्यालय

बौद्ध शिक्षा के बड़े संस्थानों के अतिरिक्त कुछ महाविद्यालयों के नाम मिलते हैं।[11] जैसे जगदल्ल महाविद्यालय जिसकी स्थापना पाल नरेश रामपाल (1084 ई. – 1130 ई.)ने बंगाल के बरेन्द्रा जिले में की थी इसे बाद में भी अनेक शासकों व व्यापारियों द्वारा अनुदान मिलते रहे। परन्तु बंगाल पर मुस्लिम आक्रमणों के समय इस महाविद्यालाय को नरसंहार के बाद नष्ट कर दिया गया। फिर भी इस महाविद्यालय ने भारतीय बौद्ध शिक्षा व संस्कृति को सम्पूर्ण बढ़ाया दिया।

ओदंतपुरी महाविद्यालय

यह भी एक प्रमुख महाविद्यालय था जिसकी स्थापना 8वीं शताब्दी में प्रथम पाल शासक गोपाल ने पाटलिपुत्र के समीप की थी। बाद के पाल शासकों, फिर सेन शासकों ने भी आवश्यकता अनुसार यहाँ निर्माण कार्य कराए। इस महाविद्यालय के साहित्यक वर्णनों को आज पुरातत्विक साक्ष्यों द्वारा भी सत्य बताया जाता है।[12] यहाँ भी बौद्ध दर्शन, साहित्य की शिक्षा दी जाती थी ताकि विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थी शोध कार्य कर सकें। परन्तु 13वीं शताब्दी में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने इसे भी नष्ट कर दिया जिसकी जानकारी मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकार "मिनहास–उस–सिराज"की कृति तबकाते नासिरी से प्राप्त होती है।[13] वैसे मुस्लिम आक्रमणकारियों ने बौद्ध विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों को नष्ट तो किया परन्तु इन शैक्षिणक संस्थानों की उपयोगिता को नहीं भुलाया जा सकता। इन्होंने शिक्षा को बढ़ावा दिया और विश्व स्तर के विद्यार्थियों को अपनी तरफ आकर्षित किया। इन्होंने पूर्व मध्यकालीन भारतीय सांस्कृतिक धर्म, राजनीतिक और आर्थिक आदि के पहलुओं को विदेशों के साथ जोड़ा जिसके कारण यहाँ भारतीय संस्कृति का प्रचार हुआ जैसे श्रीलंका, जापान, चीन, नेपाल, तिब्बत आदि।

ग्रन्थ सूची

1.	अच्युतानन्द	प्राचीन राजवंश एवं बौद्ध धर्म , पृ0 220
2.	के.एल. हाजरा	राइज एण्ड डेक्लाईन ऑफ बुद्धिज्म इन इण्डिया, पृ0 76, नई दिल्ली, 1995
3.	आर.सी.मजूमदार	एन्सिएन्ट इण्डिया, पृ0 427
4.	ए.सी.द्विवेदी	इसन्शियल ऑफ हिन्दूज्म, जैनिज्म, बुद्धिज्म, पृ0 106, नई दिल्ली , 1979
5.	वास्पति गैरोल	भारतीय संस्कृति एवं कला, पृ0 51, लखनऊ, 1972
6.	रोमिला थापर	प्राचीन भारत, पृ0 145, राजकमल प्रकाशन
7.	शीलग्राम त्रिपाठी	भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 2, नई दिल्ली 2004
8.	पुष्पा नियोगी	प्राचीन बिहार और बंगाल में बौद्ध विहार, पृ0 558, भारतीय इतिहास पत्रिका, त्रिवेन्द्रपुरम, 1972
9.	राधा कुमुद मुखर्जी	एन्शिएंट इण्डियन एजुकेशन, पृ0 567
10	पुष्पा नियोगी	पूर्वोक्त, पृ0 559
11	राधा कुमुद मुखर्जी	पूर्वोक्त, पृ0 557
12	ए.एस.अल्टेकर	एजुकेशन इन इण्डिया, पृ0 117, वाणासी, 1975
13	वही,	पृ0 122

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org